एक कहानी

Rumi

AASHIA

BlueRose ONE .com DIY
Stories Matter

© Aashia2022
All rights reserved

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author.

Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the author and publisher assume no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

First Published by

An Imprint of BlueRose Publishers

ISBN:978-93-5704-646-6

Price: INR 399

Co-Author:

Editor:

Illustrator:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.bluerosepublishers.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898

CONTENTS

CHAPTER 1
रूमी 5

CHAPTER 2
एक सपना 131

CHAPTER 3
एक इंसिडेंट 149

रात 12:00 बज रहे थे, आदित्य कार स्पीड से चला ही रहा था, की उसके चेहरे पर कोई परेशानी थी, जो साफ़ झलक रही थी।

गाड़ी अभी हाईवे पर पहुची ही थी, रास्ता काफी खाली था, हो क्यों नही आधी रात जो थी, तो आदित्य ने कार की स्पीड बढ़ा दी ओर चलाने लगा, ऐसा लग रहा था, जैसे कोई बात हो जो उसे

अंदर ही अंदर खाई जा रही है।
तभी अचानक एक आवाज़ आती है,
क्रशश.....श...थप-
प...तबाक्क्क्..,
ये आवाज़ और किसी की नही एक्सीडेंट की है जो आदित्य के कार से हुई, हुआ यु की कार की स्पीड मे, कार ने किसी लड़की को टक्कर मार दी।
लड़की को काफी चोटें आई और ब्लड भी बह रहा था, इसलिए आदित्य

ने गाड़ी से उतर कर जल्दी से उस लड़की को कार मे बिठाया और होस्पिटल ले गया।
आदित्य गाड़ी चला ही रहा था, और पीछे सीट की ओर उस लड़की को बार बार ही देख रहा था, जैसे वो उसे पहले से जानता हो!
वो लड़की दुल्हन के ड्रेस मे बेहोश पड़ी हुई थी, और पहले से भी उसके शरीर पर चोटों की निशाने थी।

कुछ देर मे होस्पिटल पहुँच गए, और आदित्य उस लड़की को अंदर ले गया, और जल्दी डॉक्टर को बुलवाया ओर इलाज करने को बोला।
डॉक्टर ने उसे इमर्जेंसी वोर्ड मे ले गये, फिर ट्रीटमेंट शुरू किया,

काफी समय हो चुका था, कोई खबर नही आई, आदित्य परेशान हो रहा था, की क्या प्रॉब्लम है अभी तक डॉक्टर बाहर नही आये, आदित्य के

चेहरे से ऐसा लग रहा था जैसे कोई अपना हो।
वह बार बार अपने आप को दोष दे रहा था, की मैं ही कार फुल स्पीड मे चला रहा था, और ये एक्सीडेंट मेरी वजह से हुआ है।

एक घंटा हो गया, डॉक्टर साहब के बाहर आते ही,
डॉक्टर क्या हुआ वो ठीक है ना, कुछ हुआ तो नही! आदित्य ने परेशान भाव से पूछा।

घबराये मत वो ठीक है "इट्स फाइन" टेंशन की कोई बात नही,
ओर हाँ 10-15 मिनट मे उन्हे होश आ जायेगा, उसके बाद हमें कुछ ट्रीटमेंट और करने है।

आदित्य अंदर जाता है ओर उसे देखते हुए, उस के पास बैठ जाता है। और कही खो जाता है.....

तभी एक लड़की चिल्लाती है, आदि ऐसा मत करो प्लीज,

"अच्छा अब क्या हुआ, पहले तो बोल रही थी, मै नही डरती, अब तो तुम नही बच सकती मेरे जाल से" श्रेया!
अच्छा ऐसी बात है, क्या करोगे अब, मिस्टर आदित्य मल्होत्रा!
रुको बताता हूँ मै तुम्हे, तभी श्रेया आदित्य के बाहों मे आ जाती है,
"अब तुम कही नही जा सकती, कब से इंतज़ार कर रहा था इस दिन का"

अब नही! (रोमांटिक अंदाज़ मे)
"बड़े रोमांटिक हो रहे हो आज, क्या बात है! पर वैसे काफी समय बाद ये दिन मिला है यूही साथ बिताने का" श्रेया बोली!
हाँ कह तो तुम ठीक रही हो, इसका भी सोल्यूशन है मेरे पास!
आदित्य ने मुस्कुराते हुए कहा।
"क्या सच मे? पर कैसे? बताओ ना आदि! श्रेया ने अचनाक् से कहा"

हमारी शादी! आदित्य ने प्यार से कहा!
श्रेया कुछ कह नही पायी, सिर्फ मुस्कुराते हुए! आदित्य से कहा -कब!
"बहुत जल्द बस मुझे थोड़ा वक़्त दो, और विश्वास रखना।
I need u श्रेया! l love u so much! आदित्य ने बड़े प्यार से कहा,
l love u to आदि! श्रेया ने आसमान की ओर इशारा करते हुए कहा!
दोनों आसमान की ओर

देखने लगे, श्रेया आदित्य के बाहों मे थी, उस पल को दोनों साथ मे एंजॉय कर रहे थे।

तभी अचानक ख्वाब टूटता है और आदित्य देखता है की उस लड़की को होश आ रहा है, होश मे आते- " ठीक हो तुम अब " आदित्य ने अपनेपन दिखाते हुए कहा!
"जी, शुक्रिया! आपका। उसने अजनबी स्वर मे कहा!
तुम रुको मै अभी डॉक्टर

को बुलाता हूँ, कही जाना मत! कहते हुए आदित्य वहा से चला जाता है।
वह लड़की उसे देखती रही की वो कौन है, और मेरी इतनी फिक्र कर रहा है!
थोड़ी देर मे डॉक्टर आते है और चेकअप करने के बाद बताते है, " शी इज़ ओकाय! आप अब इन्हे ले जा सकते है, पर इनका आपको ठीक से ध्यान रखने की जरूरत है। मैं

डिस्चार्ज पेपर तैयार करवा देता हूँ ।
"जी! मैं ध्यान रखूँगा इस बात का।
"" जी आप कौन है, मैं आपको नही जानती! आप जानते है मुझे?
तुम मुझे भूल गयी क्या इतनी जल्दी!
भूल गयी?.....मुझे कुछ याद नही! (आचानक से उसके सिर मे दर्द शुरू हो गया)
क्या हुआ ठीक हो, तभी आदित्य डॉक्टर साहब से

पूछता है क्या हुआ. इसे?
आदित्य ने फिक्र करते हुए पूछा,
घबराइये मत, शी इज़ ओकाय! ""may be their memory is gone "" ये सुनकर आदित्य शॉक हो जाता है, उसे समझ नही आ रहा है, वो क्या करे अब!
"*क्या मुझे कुछ समझ नही आ रहा, please explain me!
कुछ नही, तुम चलो मेरे

साथ! आदित्य ने उसकी ओर देखते हुए कहा!
तुम्हारे साथ कहा और क्यों! who are u? उसने थोड़े चिरचिरे सहभाव से कहा।
अच्छा फिर तुम कहा जाओगी, अभी बताओ मुझे! एक तो तुम्हारी मेमोरी लॉस! है, और मैं हेल्प कर रहा हूँ तो तुम्हे इतराज़ है। आदित्य ने चिंता जताते हुए, उससे बोला!
वह चुपचाप उसकी बात

सुन रही थी, और उसके साथ जाने लगी! वह सोच रही थी, की कौन है ये मुझे याद क्यों नही!
(उसे ऐसा लग रहा था, जैसे उसका उसके साथ कोई संबंध है, पर क्या?)

दोनों कार में बैठे, आदित्य कार चला रहा है,और लड़की उसकी साइड मे बैठी है ।
उसने दुबारा पूछा हम कहा जा रहे है, " हमारे घर तुम आज से वही रहोगी जब तक ठीक नही

हो जाती" आदित्य ने कहा ।

क्या! हमारा घर! क्या बोल रहे हो, मुझे कुछ समझ नही आ रहा, मै वहा नही रह सकती, मैं जानती भी नही और आपके साथ एक घर मे, नही नही ऐसा कभी नही होगा।

'तुम्हे याद नही, पर तुम मेरी'- इतना कहा ही की आदित्य चुप हो गया।

'मेरी' मतलब! उसने अचंबा होते हुए पूछा ।

कुछ नही वक़्त आने पर

तुम्हे खुद याद आ जायेगा, और ज्यादा मत सोचो तबियत खराब हो सकती है । आदित्य ने फिक्र जताते हुए कहा!
अभी तुम सिर्फ मुझपर विश्वास और सब्र करो ।
कहते हुए- दोनो कार मे शांति से बैठे होते है, पूरे रास्ते दोनों चुप रहते है। इतने देर मे दोनों घर पहुँच जाते है।
घर काफी बड़ा और शानदार था, कार पार्किंग

area मे पार्क करके, दोनों घर के अंदर गए, आदित्य जल्दी से अंदर जाते हुए, "रूमी तुम ऊपर जाकर फ्रेश हो जाओ मैं खाने का इंतज़ाम करता हूँ" आदित्य ने ऊपर वाले कमरे की ओर इशारा करते हुए कहा!
इतना कहते हुए आदित्य रमेश ('जो आदित्य का नौकर है') को आवाज़ लगाता है। " रमेश जल्दी

से नास्ता तैयार करदो " मैं फ्रेश होकर आता हूँ।
जी, आदित्य सर!
वो लड़की शौक थी, की आदित्य ने उसे रूमी कह कर बुलाया, क्या वह उसे जानता है। पर कैसे?
वह बड़बड़ाती हुई कमरे की ओर जाने लगी। मुझे कुछ समझ नही आ रहा, क्या हो रहा है। और मैं इस दुल्हन के जोड़े मे?
वह सोच ही रही थी की पीछे से, "मैंम आपके लिए क्या बनाउ"

जो बना रहे हो ठीक है, कुछ खास बनाने की जरूरत नही,
कहते हुए वह कमरे की ओर चली गयी
वो उपर के आखिरी कमरे मे चली गयी, जिसकी तरफ आदित्य ने इशारा करते हुए कहा था।
कमरे मे जाकर वो कबाड़ से पहनने के लिए कपड़े निकालने लगी,
उसकी नजर एक सूट पर पड़ी, जो की काफी प्यारा ओर हल्के गुलाबी रंग का

था, उसने वो सूट निकाल कर पहन लिया ओर उसके उपर हरे रंग का दुपट्टा जो की बहुत खिल रहा था, ओर खुले बालों को साइड मे किया हुआ था।

थोड़ी देर बाद कमरे से निकल कर नीचे डाइनिंग टेबल पर आकर बैठ गयी, ओर रमेश उसे गरमा गर्म चाय और ओमलैट खाने को देता है।

वो नास्ता करती है, तभी आदित्य नीचे आकर

डाइनिंग टेबल पर बैठ कर नास्ता करने लगता है।
और कहता है, "अब तुम कैसी हो, ठीक हो"
जी, I'm fine!!
मैं आपसे कुछ पूछना चाहती हूँ कि आपने मुझे थोड़ी देर पहले रूमी कह कर क्यों बुलाया? क्या हमारा कोई रिश्ता है? बताइये please say?
आदित्य खाते खाते अचानक रुक गया, और उसे देखने लगा।

कुछ नही वो ऐसे ही, आदित्य ने झिझकते हुए खाते हुए कहा।
कुछ तो है जो आप मुझसे छुपा रहे हो, बताएगें please,
तुम ज्यादा मत सोचो तुम्हारी तबियत खराब हो जायेगी, बस इतना बता सकता हूँ, की तुम रूमी हो।
बाकी तुम्हे वक़्त के साथ साथ याद आ जायेगा।
और मै तुम्हे सब कुछ नही

बता सकता, डॉक्टर ने मना किया है,
"मै ऑफिस जा रहा हूँ, अपना ख्याल रखना और दिमाग पर ज्यादा ज़ोर न देना, जो चाहिए रमेश को या मुझे बोल देना।
इतना कहते हुए, आदित्य ऑफिस के लिए चला गया।
रूमी उसे सिर्फ देखती रह गयी।
आदित्य के वहाँ से ऑफिस जाने के बाद, रूमी थोड़ी देर तक तो

वही खड़ी खड़ी देखती रही।
फिर उसके बाद वो वहाँ से अपने कमरे की ओर चली गयी, क्योकि अभी कोई काम भी नही था, और नास्ता करने के बाद रमेश ने लगभग सारे काम निपटा दिये थे।
अपने कमरे मे, आते ही रूमी इधर उधर टहलते-टहलते सोचने लगी की वो क्या करे, जिससे मन लगा रहे और समय भी बीत जाए।

अचानक उस की नजर कबाड़ मे पड़ी एक किताब पर गयी, रूमी ने उसे निकाला और देखने लगी, किताब बड़ी दिलचस्प लग रही थी, रूमी ने किताब के कवर पर लिखी किताब का नाम पड़ा तो उसे वह किताब थोड़ी आकर्षित लगी।

"झलक-एक आश है"

उसने किताब का पहला पन्ना खोल कर पढ़ना शुरू किया, पढ़ते-पढ़ते

वो उसमे खो गयी, और बड़े मगन हो गयी कहानी पड़ने मे।

सुहावना सा मौसम था, कार्तिक अपने रेस्टोरेंट मे बैठ कर पुरे महीने जीतने भी ओर्डर या बिल थे, सब चेक कर रहा था की कही कुछ गलत तो नही है। वैसे तो कभी कोई गलती होनी की गूनज़रिश् नही होती थी, क्योकि कार्तिक अपने सारे काम को बखूबी हैंडल करता

ess के प्रति बहुत लगाव है, ओर हो क्यों नही इतनी मेहनत से उसने इतना बड़ा रेस्टोरेंट खोला है, जो नोएडा का काफी मशहूर रेस्टोरेंट है।
"जिसका नाम K.V.Shop है "
ट्रिंग<ट्रिंग....ग..ग.....ट्रांग.....
"जी माँ, कहिये क्या बात है," कार्तिक ने मुस्कुराते हुए पूछा,
अरे इतना बोलना है घर आते आते जलेबीयाँ ला

दियो बहुत मन कर रहा था, सावित्री ने प्यार से कहा।
(सावित्री जो कार्तिक की माँ है)
कार्तिक फोन रखते हुए, केशव देख लेना सब। मैं बाहर जा रहा हूँ, कुछ काम है।
इतना कहते ही कार्तिक वहाँ से चला जाता है।
रेस्टोरेंट मे सब अपने काम मे वयस्थ थे। शाम के 5:00 बज रहे है, तभी रेस्टोरेंट मे कश्यप

फैमिली आती है जो खानदानी है,
फैमिली मे पांच मेम्बर है।
हरदेव कश्यप - "वेटर यहा आओ"
जी, कहिये आप को क्या चाहिए सर।
सबने मेनू देख कर अपना अपना ऑर्डर कर दिया,
मैंम, आप को कुछ चाहिए।
सोनिया, बेटा क्या कर रही हो, अब तो अपनी किताब को रख दो। बस

जब देखो कहानी लिखती रहती हो.....
जी, पापा (सोनिया ने बड़े प्यार और धीरे स्वर मे बोला।
आप मेरे लिए मंचूरियन ला दीजिये,
जी, मैंम अभी भेजवाता हूँ।
सुनिये, ज़रा देखिये ये डियमोंड का हार कितना प्रिटी है, मैं इसे ऑर्डर कर दूँ।
सीमा, तुम फिर शुरू हो गयी, तुम online

शॉपिंग करना बंद कर दो अब। हर बार कुछ नया पसंद आ जाता है।
आप भी न, हर बार दिक्कत होती आपको मेरे online शॉपिंग से।
वैसे पापा, रेस्टोरेंट तो काफी अच्छा है और ये नोएडा का बेस्ट और famous रेस्टोरेंट है। रोहन ने कहा,
और इसका नाम, "K.V.Shop" जैसे किसी ब्रांड का नाम हो!

आरव ने अपने अतरंगी अंदाज़ मे कहा,

रूमी कहानी मे गहरी तरह से डूबी हुई थी, उसे रमेश के आने का भी पता नही चला।

तभी आचानक से, मैंम आज रात के खाने मे क्या बनाउ, आप बता दीजिये, वो आदित्य सर को आने मे देर हो जायेगी, उन्होंने आप से पूछने को कहा है।

जो भी आपका मन करे आप वो बना दीजिये।

वैसे आदित्य जी कब तक आ जायेंगे, वो रोज़ ऐसे ही देर से आते है!
नही रूमी मैंम वो आज ऑफिस मे काम के वजह से देर हो गयी है।
अच्छा आप आलू मटर की सब्ज़ी और पूरी बना दो, मीठे चावल! मैं भी आ जाती हूँ आपकी मदद करने के लिए!
जी, नही रूमी मैंम मै कर लूंगा आप परेशान न हो!
कोई बात नही भइया, मै आ जाती हूँ, और इसी

बहाने मेरा मन भी लग जायेगा!
आप चलिए मै आती हूँ.....
जी, जैसा आप कहे, और मुस्कुराते हुए चला गया किचन की ओर।
रमेश के जाते ही रूमी ने बुक को बंद करके साइड मे रखा और किचन की ओर चली गयी.....
रात के 9 बज रहे थे, आदित्य ऑफिस से काफी थका हुआ आया और "रमेश डीनर रेडी

रखो मे फ्रेश होकर आता हूँ, जल्दी करो!" इतना कहते हुए अपने कमरे मे चला गया।
रूमी वही खड़ी होकर आदित्य ने जो कहा सुन रही थी, उस वक़्त वो वही किचन मे रह कर डीनर की तैयारी कर रही थी।
खाना लगाना के बाद वो डाइनिंग टेबल पर बैठ कर आदित्य का इंतज़ार करने लगी।
थोड़ी देर बाद आदित्य फ्रेश हो कर नीचे आ कर

डिनर करने लगता है, आज ऑफिस मे काम की और थकावट के वजह से भूख तेज़ लगी हुई थी,,, आदित्य खाना खाते ही "वहाँ रूमी तुमने बनाया, मैं बहुत मिस करता था तुम्हारे हाथ के बने खाने का" आदित्य ने खाते हुए कहा!

जी सुक्रिया! पर आपको कैसे पता चला मैंने बनाया और मिस करते थे मतलब मैंने पहले भी बनाया है कभी! पर कब मुझे कुछ

याद नही आ रहा! बताओ कौन हूँ मैं?
रूमी ने हैरानी से पूछा!!!!
कुछ नही तुम ज्यादा मत सोचो, तुमने पहले कितनी बार खाना बनाया है, तुम्हे नई नई डीश बनाना पसंद है।
तुम हमेशा मेरे लिए हर दिन कुछ नये नये डीश बनाती थी।
तुम मेरी बहुत अच्छी दोस्त थी, और तुम्हे बाकी सब धीरे धीरे याद आ

जायेगा! इससे ज्यादा कुछ नहीं बता पाऊंगा मैं!
आदित्य खाना खाकर अपने कमरे की ओर " गुड नाइट रूमी " कहकर चला गया।
रूमी उसे देख सिर्फ़ मुस्कुराते हुए धीरे से बोली गुड नाइट!
उसे थोड़ा अजीब फील हुआ जो आदित्य ने बताया उसके बारे मे, उसके दिमाग़ मे अभी भी कुछ सवाल थे जो उसे मन मे चल रहे थे!

पर सब छोड़कर वह खाना कर सारे काम रमेश के साथ निपटाने के बाद अपने कमरे मे चली गयी, और बिस्तर पर लेट कर कुछ सोचने लगी!
इधर आदित्य रूमी के बारे मे सोच रहा है की कब और कैसे रूमी को याद आयेगा सब?
और उसे ये भी की हमारा रिश्ता क्या है? मैं खुद नहीबता सकता!
तभी आदित्य उन यादों मे

खो गया जिन्हे याद कर रहा है।
और गाने सुनने लगा.....जो उसके यादों को ताज़ा करता है!
साँसों का चलना थम सा गया, जीते जी मै मर गया.....
मैने तो अपना माना तुझे, तूने पराया कह दिया....
रोए न थे नैना मेरे - रोए न थे नैना मेरे, आखिर तुने रुला ही दिया....
साँसों का चलना थम सा

गया, जीते जी मै मर गया.....
मैने तो अपना माना तुझे, तूने पराया कह दिया....साँसों का चलना थम सा गया, जीते जी मै मर गया.....
मैने तो अपना माना तुझे, तूने पराया कह दिया....
रोए न थे नैना मेरे - रोए न थे नैना मेरे, आखिर तुने रुला ही दिया....
साँसों का चलना थम सा गया, जीते जी मै मर गया.....

मैने तो अपना माना तुझे,
तूने पराया कह दिया....

आदित्य गाना सुनते पुराने यादों को याद करते सो जाता है,
और रूमी अपने कमरे मे खिड़की के पास खड़ी चाँद की रोशनी की तरफ चेहरा करके आसमान को देख रही होती है,
तभी उसे कुछ धुँधला धुँधला सा नज़र आने लगता है पर क्या वह समझ नही पाती...
उसे ऐसा लग रहा था जैसे

चाँद या चाँद की रोशनी से कुछ जुड़ी हुई यादे हो जो उसे ऐसा एहसास दिला रही हो।
तभी अचानक. उसके सर मे दर्द शुरू हो जाता है, और वो बिस्तर पर लेट जाती है कब वो गहरी नींद मे सो जाती है उसे पता नही चलता।
आधी रात हो चुकी थी, दोनों गहरी नींद मे सोये हुए थे। तभी "हे मिस रुचिका मेहरा, where are going!"

फिर से ड्रामा शुरू तुम्हारा! बंद करो ये सब! तुझे पता है न मुझे ये सब tanturam नही पसंद! तो तु ये सब क्यु करता है। (पागल है समझ नही आ रहा कैसे समझाऊँ इसे, खैर छोड़ो!)

तभी अचानक, """"please save me! please come here and help me!😕🥺

रूमी नींद मे बड़बड़ाने लगती है, तभी अचानक से उसकी नींद खुल जाती

है उसे एहसास होता है की वह सपना देख रही थी।
पर इतना अजीब क्या हुआ था और क्यु?????? मुझे कुछ समझ नही आ रहा.....

रूमी सोच ही रही होती है तभी उसकी नज़र बाहर जाती है और देखती है की सुबह हो चुकी है और घड़ी मे 8am बज रहे है।
वह जल्दी उठ कर फ्रेश हो कर तैयार हो जाती है,

उसने पीले रंग का सूट और हल्के गुलाबी रंग का दुप्पटा पहना।
रूमी कमरे से निकली ही थी की सामने से आदित्य भी अपने कमरे से निकल रहा था।
आदित्य call पर बात रहा था, तो उसकी नज़र वहाँ उसके पीछे चल रही रूमी पर नही गयी.....
रूमी सपने के बारे मे सोचते सोचते चली जा रही थी कब वो आदित्य

के आगे निकल सीढ़ियों के पास पहुँच गयी,
"" स्टॉप रूमी..... आदित्य ने पीछे से आवाज़ लगाई " तभी अचानक रुक कर पीछे पलटती ही है की आदित्य जो उसके नजदीक ही खड़ा होता है। उसे देख चौँक जाती है।
"क्या रूमी ध्यान कहा है अभी क्या हो जाता तुम्हे अंदाज़ा है! रूमी उसे सिर्फ़ देखती रह जाती.....

आदित्य भी कहते कहते रुक जाता..
दोनों बस एक-दूसरे को देखते रहते, और खामोश!!!!!!
आदित्य सर, नास्ता तैयार है आ जाइये।
रमेश की आवाज़ सुनते ही, वो दोनो होश मे आते ही नीचे नास्ता करने आ कर बैठ जाते है और चुपचाप नास्ता करने लगते है!
आदित्य ने जल्दी नास्ता

कर लिया और ऑफिस के लिए निकल गया।
इधर रूमी नास्ता करने के बाद अपने रूम मे चली गयी और बैठ कर वही किताब पढ़ने लगती है।
""झलक - एक आश है""
कहानी को दुबारा वही से पढ़ना शुरू किया, जहा से उसने छोड़ा था!!!
उसने किताब पढ़ना शुरू ही किया था की, उसके सर मे अचानक से वही दर्द होने लगा, जो उसे हर बार होता है।

"please no?? मुझे छोड़ कर मत जाओ!!!! मैं सच बोल रही हूँ!! ये सब??????????
रूमी बड़बड़ा ही रही थी, और थोड़ी देर बाद वो वही बेहोश हो गयी!!!
शाम को आदित्य ऑफिस आते ही, वह सीधे रूमी के कमरे मे
कुछ काम से आता है तो वह रूमी को बेहोश देख वह घबरा जाता है, और जल्दी से उसे उठाकर बेड पर लेटाते हुए, उसने

डॉक्टर को फोन किया, " डॉक्टर साहब आप जल्दी से मेरे घर आ जाइये, रूमी बेहोश हो गयी है।
ठीक है मैं आता हूँ, तब तक तुम ध्यान रखना और कुछ भी हो मुझे खबर करते रहना!!
आदित्य ने फोन रखते हुए, बड़बड़ाने लगा "तुम पहले भी ऐसी थी और अब भी बिल्कुल care-less!!! बोला है रेस्ट करो ज्यादा जोर मत डालो दिमाग पर, नही सुननी ही

नही है, हमेशा अपने मन की करनी है!!! बस तुम एक बार ठीक हो जाओ तब सब सही हो जायेगा, कितना इंतज़ार करवाया है।"

इतना कहते हुए, चुप हो कर बस रूमी को देखने लगता है।

थोड़ी देर मे डॉक्टर आते है जिन्होंने रूमी का ट्रीटमेंट किया था!

आते ही डॉक्टर साहब ने चेक किया, और बोला situation पहले से

better होने की जगह, और खराब हो रही है, इन्हे थोड़ा सा शौक लगा किसी वजह से, पहले से और ज्यादा ध्यान रखना और मैं दूसरी मेडिसिन लिख कर देता हूँ, वो जरूर देते रहना!!! अब मैं चलता हूँ, बस इन्हे जो याद नही है वो सब सोचने न दे!!! तो अब मैं चलता हूँ।
ठीक है! डॉक्टर साहब जैसा आप कहे!
डॉक्टर के जाने के बाद

रूमी को कुछ देर बाद होश आता है, " आदित्य वही बैठा होता है। "ठीक हो सर दर्द तो नही हो रहा, आदित्य ने हक जताते हुए पूछा"
नही! मैं ठीक हूँ 'आदि' तुम फिक्र करना छोड़ो, मुझे कुछ नही होगा!! -- रूमी बेड से उठते हुए बोला?
आदित्य उसे बड़े हैरानी से घूर रहा था, क्योकि रूमी ने उसे आदि कहा!!! जो उसे याद नही, "शायद

रूमी को सब याद आ रहा है" उस दिन का इंतज़ार है जब तुम्हे सब याद आ जायेगा।
आदित्य ये सब सोच ही रहा था, तभी वह उठ कर अपने रूम की ओर चला गया, और खिड़की की तरफ़ चेहरा करके खड़े होकर सोचने लगा, "रूमी को सब याद आ रहा है, ये देख खुशी तो हो रही है, पर उसे सब याद आ जायेगा तो क्या वो समझ

पायेगी मुझे या फिर से मुझे छोड़??????????
नही नही!!!! वो ऐसा नही करेगी, वो समझेगी मुझे, और मेरे साथ ही रहेगी, जितना मैं जानता हूँ उसे वो ऐसी नही है!!!
पर जो उसके साथ हुआ उसे भूल कर मेरा साथ???????
आदित्य सोच ही रहा था, तभी वह मुस्कुराने लगा! आज जैसे रूमी ने मुझे आदि कहा, और अपनी मासूमियत से बोला तो

एक पल के लिए, मुझे खुशी हुई!!!
आदित्य फिर से पुराने ख्यालों मे खो गया!
और गाने सुनने लगा, और यादों को याद करके जी रहा था!!!!
तब तक सुबह हो चुकी होती है और आदित्य भी आज जल्दी ऑफिस जा चुका होता है.....
रूमी मैंम, अभी आपकी तबीयत खराब है और आप बाहर जा रही है कुछ हो गया तो, आदित्य सर

को पता चला तो मुझे डाटेंगे की मैंने आपको क्यों जाने दिया!!! (रमेश ने कहा)
मैं घर मे बैठे बैठे बोर हो गयी हूँ, बाहर जाऊंगी तो अच्छा लगेगा और मन भी लगा रहेगा, मैं जा रही हूँ और तुम मुझे नही रोकोगे!!!!
इतना कहते हुए, वह बाहर चली जाती है।!!!!
इधर रूमी घर से बाहर निकल कर सीधे मंदिर चली गयी, ताकि कुछ पल

वह शांति से बीता सके, और बाहर की चहल पहल होते देख उसे बड़ा सुकून मिल रहा था!!
मंदिर मे कुछ देर रूमी बैठी रही, और फिर शाम होने को है अब मुझे घर चलना चाहिए!!
रूमी घर जा ही रही थी, की अचानक वह किसी लड़की से टकरा जाती है, "sorry मुझे late हो रहा है कही जाने के लिए तो I'm really sorry, कहते हुए वह लड़की

सीधे, अपने रास्ते चली जाती है!!
रूमी उसे देख हैरान है की पहले टकराई और sorry बोल कर इतनी जल्दी मे!!! कितनी अजीब लड़की है ये!!!
खैर छोड़ो वैसे भी घर जल्दी पहुँचना चाहिए वैसे भी शाम होने को है। घर जाने को वो आगे बढ़ी ही थी की उसे एक आवाज़ सुनाई दी, "अरे यार तुम भी, तुम कभी नही सुधरोगे, जाओ श्रेया के

पास इसलिए जल्दी हो रही है तुम्हे"!!!!!
वो समझ नही हो पा रही थी की किसकी आवाज़ है ये और मुझे बार बार कुछ धुँधला धुँधला सा नजर तो आता है पर क्या है पता नही!!!!!
सोचते सोचते कब घर पहुँच जाती है पता नही चलता उसे!! अंदर आ कर उसने देखा की हॉल मे सोफे के पास कोई लड़की बैठी है, "जी मैंम, आदित्य सर अभी घर पर

नही है आप इंतज़ार कर लीजिये!!!! उनका ऑफिस से आने का वक़्त हो गया है आते ही होंगे!!! नही, मुझे देर हो रही है, मैं दुबारा फ़िर कभी मिल लुंगी अभी चलती हूँ!!!! वो वापस जाने के लिए जैसे ही उठ कर पलटती है तभी उसकी नज़र रूमी पर गयी, " तुम यहाँ और कैसे कब?????रूमी हैरान भाव हो कर कहती है। आप तो वो????
उसने ज्यादा कुछ नही

बोला और चली गयी, जाते जाते इतना कहा, दुबारा मुलाकात जरूर होगी शायद!!!!!
रूमी उसे बस हैरानी से जाते हुए देख रही थी की कौन है, क्या ये मुझे!!! या मैं इसे जानती हूँ, या कोई जान पहचान की??????
थोड़ी देर मे खाने का वक़्त हो गया, रमेश किचन मे रात के खाने के लिए खाना बना रहा है, रूमी भी किचन मे जाकर

खाना बनाने मे मदद करने लगी।
खाना बन कर तैयार हो गया और डाइनिंग टेबल पर लग चुका था, तब तक आदित्य भी ऑफिस से आ चुका था, वह जल्दी फ्रेश हो नीचे आकर डिनर करने लगा!! उसे काफी भूख लगी हुई तो वह बैठ कर डीनर करने लगा, रूमी भी बैठ कर डीनर करने लगी!!!!
डीनर करने के बाद

आदित्य बाहर walk पर चला गया।
रूमी डीनर के बाद किचन का सारा काम रमेश के साथ मिलकर खत्म कर के अपने कमरे मे चली गयी, और अपनी वो बुक पढ़ने लगी।
आदित्य को बाहर आकर काफी अच्छा और बेटर फील हो रहा था, तो वह वही खाली जगह बैठ कर आसमान की तरफ मुह करके सितारों को देखने लगा।

आदित्य पुराने ख्वाबों मे खो गया, और उन पलो को याद करने लगा,
श्रेया तुम न, बहुत जिद्दी हो कोई बात नही मानती मैं कह रहा हूँ कि मैं झुठ नही बोल रहा!!!! सब्र करो मैं सब ठीक कर दूँगा!!! please विश्वास करो मेरा????
नही तुम!!! जब मुझे प्यार करते हो तो सब बताते क्यों नही, क्यों छुपा रहे हो!!! कितनी बार मैने नोटिस किया है!!! तुम

कुछ बताते नही हो मुझे???????
ऐसा नही श्रेया!!!! चलो छोड़ो, ये बताओ आज का दिन कैसा रहा, मुझे miss किया होगा!!! (थोड़े flirting style में)!!!
हाँ किया तुम्हे क्या!!! खुद तो याद नही करते, (थोड़ा सा नाराज़ होते हुए)
तुम्हे क्या पता पुरा दिन कितना miss किया और कितना याद!!!! कितना प्यार करता हूँ, 🤍

बाते बनाना कोई तुमसे सीखे!! अब जल्दी से sorry बोलो और I love u बोलो!!!!
इतनी सी बात, love you a lot my shreyu😘😘 """"love u too my beloved""""""" 🤎

आदित्य उन ख्वाबों को याद करके मुस्कुरा देता है, रात काफी हो चुकी थी तो उठ कर घर की तरफ जाने लगा!! और चेहरे पर मुस्कुराहट लिए!!!!!

घर पहुँच कर आदित्य सीधा अपने कमरे मे चला गया, तो वो खिड़की के पास खड़े चाँद की ओर चेहरा करके खड़ा हो गया, कुछ सोचने लगता है!

आदित्य खिड़की के पास खड़े हो कर खुले आसमान को देख रहा था, तभी उसे एक un-known नम्बर से कॉल आता है।

उसने कॉल उठाया ही था की उधर से आवाज़ आई,

"" वो फिर आ गयी तुम्हारे लाइफ मे, क्यों आई है वो क्या चाहती है! मेरी खुशियों को बर्बाद करके उसे खुशी नही मिली, जो दुबारा आ गयी, इतना कहा ही की, "" श्रेया तुम? क्या बोल रही हो ठीक हो तुम, कितनी बार कहा है जैसा तुम सोच रही हो वैसा कुछ नही है! और न रूमी की कोई गलती है!!! "ठीक है, मैं अभी कही बाहर आई हुई हूँ। दिल्ली आते ही तुमसे मिलती हूँ,

वैसे भी आज शाम को आई थी, पर तुम नही मिले, और मुझे देर होने के कारण जल्दी जाना पड़ गया!!!!!
फोन रखते ही आदित्य अपने बेड पर लेट गया, और सोने के लिए आँखे बंद कर लिया! (मन ही मन सोचने लगा, तुम्हे कब सब कुछ याद आयेगा, अब तुम्हे कही नही जाने दूंगा!!!! पहले तो रोक नही पाया, बस अब तुम

जल्दी से ठीक हो जाओ!!!!

""आदि जल्दी आओ, please come here!!!!!""""

आदित्य ने आवाज़ सुनते ही रूमी के पास तुरंत गया, तो उसने देखा रूमी नींद मे बोल रही है, आदित्य उसके पास बैठ गया, "" रूमी मे यही हूँ!!! मैं आ गया तुम्हारे पास!!!

"आदि मुझे अकेले कभी मत छोड़ना, न मुझे जाने देना खुद से दूर, मुझे

तुम्हारे पास साथ मे रहना है!!!
"" रूमी कुछ नही होगा मैं यही हूँ, मैं कही नही जा रहा!!!
आदित्य वही रूमी के पास बैठ गया, और उसे ही घूरते हुए, "" पागल लड़की है पहले समझ मे नही आती, और जब समझ आने लगती तो फिर कंफ्यूज कर देती है!!!
जो भी हो पर रूमी तुम्हारे जैसी या तुम एक ही

अरिंजिनल हो, सिर्फ मेरी!!!?
कुछ देर बाद रूमी को होश आता है, होश मे आते ही "आदि तुम? कहाँ थे, खैर छोड़ो मुझे तुमसे कुछ बात करनी है??
'आदित्य हैरान होते हुए,' हाँ कहो क्या कहना है!!
रूमी जैसे ही बताती, उसे चक्कर सा आ गया!!
ये देख आदित्य ने जल्दी से dr. को बुलाया, " dr. साहब जल्दी आइये, रूमी अचानक बेहोश हो गयी!

अभी डॉक्टर को आने मे काफी समय था, और इतनी रात? पर डॉक्टर का घर पास मे ही था तो कोई दिक़्क़त की बात नही थी! जब तक डॉक्टर नही आये आदित्य वही रूमी के पास बैठा रहा।
डॉक्टर के आते ही,""डॉक्टर साहब रूमी को क्या हुआ वो ठीक तो है, कोई परेशानी की बात??
डॉक्टर ने चेक करके बताया, "" परेशानी की

कोई बात नही, मेडिसिन का असर है, वह धीरे धीरे अपना असर कर रही है!""

क्या मतलब रूमी के तबियत मे सुधार?? आदित्य ने अचरंज से पूछा????

कह सकते है पर पहले से ज्यादा ध्यान रखने की जरूरत है, इन्हे कभी भी शौक या कुछ भी हो सकता है, जिस तरह से यह बार बार बेहोश हो रही है!!

इनका ख्याल और ध्यान रखना और मेडिसिन कोई भी मिस या चेंज न करना!!
जी, डॉक्टर साहब! आप जैसा कहे!
अब मै चलता हूँ! (डॉक्टर के वहाँ से जाने के बाद)
रूमी अपने बेड पर अभी बेहोश थी, और होश आने मे अभी काफी समय है!!!
आदित्य थोड़ी देर वही बैठने के बाद, उठ कर अपने कमरे मे जाकर बेड पर लेट गया! बेड पर

लेटते ही उसे नींद आ गयी!!
सुबह का वक़्त रमेश,"" आदित्य साहब नास्ता तैयार है आप कहे तो आपके कमरे मे ले आउ?
नही, मैं नीचे ही आकर करता हूँ!! तब तक रूमी को भी होश आ गया होता है, वह उठ कर फ्रेश होने के बाद हल्के गुलाबी रंग का कुर्ती और प्लाज़ो पहना और पीले रंग का दुपट्टा!!
बालों की फ्रेंच चोटी!!

रूमी तैयार होकर डाइनिंग पर आकर नास्ता करने लगी! आदित्य ने भी आज हल्के गुलाबी रंग का शर्ट पहना है,उसके नीचे आते ही आदित्य उसे देख हैरान हो जाता है, पर उसे देख आदित्य के चेहरे पर एक प्यारी सी मुस्कान थी!! वह बार बार रूमी को ही देख रहा था।
नास्ता करने के बाद आदित्य ऑफिस जाने लगा, जाते जाते "" रूमी

आज बहुत प्यारी लग रही हो ये कलर खिल रहा है तुम पर ""कहते हुए ऑफिस चला गया!!
रूमी की चेहरे पर एक प्यारी सी मुस्कुराहट थी!!
फिर रूमी अपने कमरे की ओर जाने लगी तो दरवाजे की डोर बेल बजी रूमी ने जाकर दरवाजा खोला तो कोई पोस्ट मेन आया हुआ है, उसने एक एनवलप निकाला और रूमी को दे दिया!! और वह चला गया!!

रूमी ने एनवलप को अंदर आकर देखा तो उसपर आदित्य का नाम लिखा था, भेजने वाले का नाम "श्रेया"???
नाम पढ़ते ही रूमी को ऐसा लगा शायद वो ये नाम पहले से जानती है किसका है??? पर याद नही आ रहा!!
उसने वो लिफ़ाफ़ा खोला!!
""कुछ तस्वीरें थी उसमे?? आदित्य की किसी लड़की के साथ, पर वह लड़की

कौन?? मैं तो जानती नही!!! शायद " श्रेया "तो नही,वही हो सकती है! वैसे श्रेया कौन है, उसकी तस्वीरें इस घर मे कही नही देखी मैने!! न कभी किसी से ज़िक्र??
खैर छोड़ो होगी कोई मुझे क्या करना हर मामलों मे मुझे पड़ने की जरूरत नही!!!
रूमी ने वो तस्वीरें उसी लिफ़ाफ़े मे रख कर वही टेबल पर रख दिया और अपने कमरे मे चली गयी!!

कमरे मे जाकर वह बेड पर लेट गयी और बुक पढ़ने लगी!!
बुक पढ़ते पढ़ते वो थक गयी और बुक साइड मे रख दिया और कमरे से बाहर निकल गार्डन मे चली गयी, उसे समझ नही आ रहा था की वो क्या करे!
"मैं तो बोर हो रही हूँ क्या करू?? सोचते सोचते उसने आदित्य को call किया, " आदित्य ने देखा किसी unknown नंबर

से call??? ऑफिस की मीटिंग के लिए Important presentation बनाने की वजह से उसने call ignore कर दिया।।
रूमी ने फिर से दुबारा call किया, इस बार आदित्य ने call Important समझ कर उठाते ही हैलो! कौन??????????
रूमी आदित्य की आवाज़ सुन कर समझ नही आ रहा था की क्या कहे,

उधर आदित्य हैलो! कौन?? बोलेगा कोई अब। हैलो!!
रूमी ने धीरे स्वर मे मैं हूँ रूमी! ये सुनते ही आदित्य surprise हो गया, उसे खुशी भी थी की रूमी ने call kiya, और हैरानी इस बात की call रूमी ने कैसे???
आदित्य ने पूछना चाहा, तभी रूमी ने कहा- आदि वो मैं बोर हो रही थी, तो इसलिए तुम्हे call कर लिया,

कोई बात नही, बोलो कुछ कहना है,
ये सुनते ही रूमी हैरान हो कर, "तुम्हे कैसे पता मुझे कुछ कहना है"
वो सब छोड़ो क्या कहना है अब बोलो भी?
वो मुझे कुछ बाहर खाने का मन कर रहा है, तो क्या तुम आते वक़्त कुछ ला दोगे?? और एक बात आज तुम जल्दी घर आ जाना!!
आदित्य ने ठीक है!!! और

कुछ??(मन ही मन मुस्कुराते हुए)😊
"कुछ नही" और रूमी ने call रखते हुए, अंदर जाकर किचन मे शाम के खाने की तैयारी करने लगी!!
आज आदित्य थोड़ी जल्दी ऑफिस आ गया, और आते ही रूमी नीचे आओ तुम्हारे लिए ice-cream और जलेबी लाया हूँ!!!!!
रूमी नीचे आते ही, देख कर खुश हो जाती है और थैंक्स यू " आदित्य जी!!!!!

बहुत मन कर रहा था, अचानक सोचने के बाद, रूमी रमेश को- भइया ये जलेबी आप खा लीजिये, और ice-cream फ्रीज मे रख दीजिये, खाना खाने के बाद खा लेना!!!!! और वैसे हम खाना बाहर से खायेंगे, और आने मे थोड़ी देरी हो जायेगी तो आप इंतज़ार मत करना! समय पर सो जाइयेगा!!!!! इतना कह कर रूमी, आदित्य को " मैं बाहर

इंतज़ार कर रही हूँ आपका!! जल्दी आना!!"
आदित्य हैरान था, उसे समझ नही आ रहा था ये सब क्या हो रहा है, कही सब????????
पर कब? कैसे? और सब ठीक है???????
आदित्य सोच ही रहा था, तभी मेसेज आता है- hurry up!!!
आदित्य जल्दी से जाता है और कार मे बैठते वक़्त उसके चेहरे पर smile झलक रही थी, और रूमी

के चेहरे पर भी वैसी smile!!!!!!!!!
कार स्टार्ट किया ही, "कहाँ चलना है?????" आदित्य ने चाबी लगाते हुए पूछा!!
मेहरा हाउस .....
आदित्य अचानक शौक होते हुए,"वहाँ!!!!!! वहाँ क्यों?????"
रूमी चुप थी, चलो तुम सिर्फ इतना कहाँ??
आदित्य चुप चाप कार चला रहा था, मन मे कई

सवाल थे, पर बोलना सही नही!!!!!
थोड़ी दूर पहुँचे ही थे की रूमी को अचानक चक्कर आया और बेहोश हो गयी?????
बेहोश होने से पहले रूमी ने इतना कहा-"वो वीडियो" उसे बचा लो!!!!!!!!
आदित्य ने तुरंत कार होस्पिटल की ओर मोड दी, और कुछ देर बाद होस्पिटल पहुँचते ही आदित्य अंदर जाते ही

रूमी को admit करते हुए, "नर्स डॉ. साहब please check! what happened to rumi?????
please sir!!! wait a time!!!!! I'll check and inform that u!!!!
डॉ. साहब ने इतना कहते हुए, अंदर चले गए check up के लिए!!!!!
काफी समय हो चुका था, कोई खबर नही!! अभी

भी ट्रीटमेंट चल रही थी!!!!!
आदित्य को बड़ी फिक्र हो रही थी की अचानक क्या हो गया, और रूमी मेहरा हाउस क्यों????????
उसे सब कुछ याद??????
बेहोश होना इसी से connect?????
कुछ समझ नही आ रहा, क्या हो रहा है!!!!
तभी अचानक श्रेया का call.....tring.....ring.....ggggggg....
2-3 missed calls...

आदित्य ने देखा श्रेया की इतनी सारी calls, वो भी इस समय!!!

(बड़ी हैरानी की बात जबसे रूमी की खबर मिली है, तबसे श्रेया call करती है, नही तो कई महीने बीत गए श्रेया की कोई न calls, न मेसेज????????)

आदित्य इस समय श्रेया से बात नही करना चाहता था, तो उसने दुबारा call नही किया,..... पर श्रेया ने एक बार फिर call किया!

पर आदित्य ने नही उठाया!!! उसका ध्यान सिर्फ रूमी पर था, की कब उसे होश आयेगा।।।।।।।।
कुछ देर बाद डॉ. साहब कमरे से बाहर आते है," "क्या हुआ, रूमी ठीक है!!!!! कोई परेशानी की बात तो नही""
हमे आपसे कुछ बात करनी है, मेरे कैबिन मे आकर मुझसे मिलिए!!!
आदित्य को फिक्र होने लगी, वह डॉ. के कैबिन मे

गया!! "" जी डॉ. साहब??????
क्या बेहोश होने से पहले कुछ ऐसी घटना या बात हुई थी?????
जी, कुछ खास नही!! रूमी कही ले जा रही थी मुझे!!!! कुछ प्रॉब्लम है.....
दरअसल, जब हम ट्रीटमेंट कर रहे थे? तब वह एक ही बात बार बार बोल रही थी???? वह सब मिटा देगी!! बर्बाद कर देगी??????
उनकी हालत वैसे अभी

ठीक है, शायद उन्हे सुबह तक होश आ जाए!!!! फिर आप उन्हे ले जा सकते है!!!!!
मैं कुछ मेडिसिन लिख देता हूँ, आप उन्हे समय से देते रहना!!!!!
जी, डॉ. साहब!!!!! मैं ध्यान रखूँगा!!!!
आदित्य वही कमरे के बाहर ही सो गया रात भर!!!!
सुबह होते ही, रूमी को होश आ गया था!!! आदित्य की भी नींद खुल

गयी! वह उठते ही रूमी के पास गया!! "" तुम ठीक हो अब????
हाँ! वैसे मुझे क्या हुआ था आप बतायेंगे??
आदित्य हैरान होते हुए, "" तुम्हे कुछ याद नही??
याद पर क्या???? हम तो शायद बाहर ice-cream खाने गए थे????
आदित्य हैरान था, रूमी को कुछ याद नही, की मेहरा हाउस जा रहे थे?? या रूमी को सब याद आ रहा है, और याद के पीछे

कुछ ऐसा सच है, जो सिर्फ़ रूमी जानती है????? जिस तरह से वह रात को बात कर रही थी???
ख़ैर छोड़ो, अब तुम ठीक हो अब? चले घर या यहीं रहना है!!! थोड़ा मुस्कुराते हुए😉!!!!
चलना है, यहाँ कौन रहेगा भला!!!
दोनों कार में बैठ कर घर पहुँचते ही अंदर जाते ही, घर मे आदित्य की

फैमिली आई हुई होती है!!!!!
मम्मी,पापा,छोटे भाई-बहन और प्यारी सी दादी!!!!
आदित्य surprise था! अपने फैमिली को देख???
"माँ, दादी आप लोग!!
(आदित्य के चेहरे पर एक अलग ही खुशी थी)
हमे तो आना था, आगे की बात करने??? आदित्य की माँ ने मुस्कुराते हुए कहाँ)
तभी दादी, " रूमी तुम

भी, मेरी गुड़िया "!!! अंदर आओ!!
जी, नमस्ते!!! आप सब लोग कौन???
कौन मतलब??? तुम भूल गयी हमे?? मैं दादी !!!!
रूमी तुम अपने कमरे मे जाओ!!! आदित्य ने उसे कमरे की ओर इशारा करती हुए कहाँ!?
क्यूँ??? क्या हुआ?? रूमी ने अचरंज से पूछा???
कुछ नही!! मैं तुम्हे बाद में बताता हूँ!! अभी जाओ!!
ठीक है!!!! रूमी ने इतना

कहते हुए वहा से अपने कमरे मे चली गयी!!!
वो दादी दर-असल कुछ महीने पहले रूमी मुझे मिली, पर उस वक़्त इसका एक्सीडेंट होने के कारण इसकी मेमोरी चली गयी है!! और डॉ. साहब ने उसे रेस्ट करने और कुछ याद या बताने को मना किया है!!!
उसे खुद ही समय समय से याद आ जायेगा!!
ये तो बड़ी बात हो गयी हमे खबर तक नही!! कोई

नही हमारे प्यार से सब ठीक हो जायेगा!!
वैसे तु अब खुश हो जा तेरी ज़िंदगी बदलने वाली है!!
क्या मतलब माँ??? मैं समझा नही???
तुम्हारी शादी और क्या!!!
दादी ने बड़े प्यार से कहाँ!!
शादी इतनी जल्दी??? और किससे???
किससे मतलब!! श्रेया से और कोई भी होगी!!!!
श्रेया से???? पर क्यों???

मुझे पूछा भी नही और आप ने तय कर दिया सबने???
तय कर दिया?? क्या मतलब तुझे ही तो जल्दी थी पहले!!!
पहले और अब सब कुछ बदल गया है!! और श्रेया तैयार है??
वो तो कबसे तैयार बैठी है!!! कल आ रही है! अपने पापा के साथ!! सारी रस्मो और तैयारी के बारे मे मिलकर बात

करने!!!
पर माँ????
माँ क्या कोई और पसंद है क्या??
माँ इतनी जल्दी क्या है!!!!!
तुझे जल्दी नही है, पर मुझे है, अपने बहू को लाने के लिए और पोते पोती को खिलाने के लिए!!!!
अब बस कुछ और सवाल नही!!! सब तय हो चुका है!!! तुझे समय दिया था काफी, अब समय खत्म हो चुका है!!!!!!

वर्धना किचन की ओर चली गयी!!! (वर्धना आदित्य की माँ)
पर माँ???????? (आदित्य पुकारते ही रह गया, पर वर्धना ने सुना नही!!!)
"दादी आप तो कुछ कहो,, मैं क्या करूँ अब तूने समय मांगा था सोचने का, पर तूने न बात की इस बारे मे न हाँ बोला!?!!!
वैसे भी पहले तो बहुत जल्दी हो रही थी, तो अब क्या हुआ??? कोई और

बात है क्या???
" दादी.....😕😕😕
अच्छा अब मैं आराम करने जा रही हूँ कमरे में थक चुकी हूँ!!!
आदित्य उन्हे जाते हुए देखता रह गया!!!!
आदित्य भी अपने कमरे मे चला गया, और खिड़की के पास जा कर खड़ा हो गया!!!
इधर वर्धना किचन से नास्ता बनाकर फ़ारिक हो गयी!!!
रमेश ने वर्धना के साथ

मिलकर सबका नास्ता उनके कमरे में ही दे दिया!!!! (आज सब थके और परेशान थे तो नास्ता कमरे में ही भिजवा दिया)
दोपहर होने तक, वर्धना गोवित्रि के साथ मिलकर शादी की कुछ बाते करने लगी, की कैसे कब से शुरू करनी चाहिए!!!! (गोवित्रि आदित्य की दादी)
राहुल, आनिया मिलकर शादी की कुछ col-labration वीडियो की

तैयारी कर रहे थे!!
(राहुल, आनिया आदित्य के छोटे भाई-बहन है)
राहुल ये caption नही, ये वाला सही है!!!
अरे! आनिया ये भी add कर लेते है, दोनों caption बेटर है!!! हाँ ठीक है, चल बाहर चलते है!!!
रूमी अपने कमरे से बाहर हॉल में आ जाती है, और वर्धना और दादी के संग बैठ जाती है!!
और बेटी रूमी कैसी हो, इतने सालों बाद काफी

बदल गयी हो..... दादी ने प्यार से कहाँ!!
वैसे दादी मैं नही जानती की आप मुझे कैसे कबसे जानते हो.. तो मैं खुद को बेहतर नही जानती!!!
वैसे आप स्वीट हो!!!
ऑन्टी आप किस तैयारी की बात कर रहे हो, मुझे कुछ समझ नही आ रही???
वो बेटा, आदित्य की शादी की!!!
आदित्य जी की, पर

किससे?? मेरा मतलब लड़की कौन है???
श्रेया!!! (श्रेया का नाम सुनते ही रूमी हैरान हो गई!! ये तो वही envo-lope वाली???? मन मे सोचने लगी)
बड़ी प्यारी बच्ची है, आदि की पसंद की है, कुछ साल पहले "ऑफिस के किसी मीटिंग के सिलसिले से london गया हुआ था, वहाँ मीटिंग में श्रेया मिली थी!! फिर वही से बाते, मुलाकाते

और दोनों फिर एक दूसरे को पसंद करने लगे!!
काफी समय तक तो आदि ने हमसे ये बात छुपा कर रखी थी, फिर खुद ही शादी की ज़िद करने लगा!!!
फिर ऑन्टी आगे क्या हुआ??????
बस आगे की कहानी सुनते रहना फिर कभी, (दादी ने शाम का वक़्त देखते हुए कहा) शाम होने को है कोई चाय बना

लो!!! (दादी बाहर जाते हुए बोली)
जी, माँ अभी बना देती हूँ!! वैसे भी आदि के पापा आने वाले ही है, आते ही उन्हे चाय चाहिए होते है!!! आज ही आये और आते ही ऑफिस चले गए, सबसे important उनके लिए उनका काम है!!!!
ऑन्टी मैं भी आपकी कुछ मदद कर देती हूँ, वैसे भी फ्री ही हूँ, और थोड़ा मन

लग जायेगा आपके साथ!!!
ठीक है चलो!!!
वर्धना और रूमी किचन मे चाय बनाने लगे, और साथ मे रात की खाने की तैयारी?!!
आज खाने मे पनीर की सब्ज़ी और फ्राय राइस और मीठे में गाज़र का हलवा.... तुम बताओ कुछ चेंज करना हो तो???
ये सब ठीक है और कुछ नही.....
अच्छा अब तुम ये पकोड़े

तल लो, तब तक मैं चाय तैयार करती हूँ!!!
जी, ऑन्टी!!
थोड़ी देर बाद, ऑन्टी लाइये मैं चाय दे आती हूँ सबको!!!
तुम, माँ,आदि, राहुल,और अनाया, को चाय दे दो, और मैं बाकी खाने की तैयारी करती हूँ? इनके आने का समय हो गया है बस आते ही होंगे!!! तुम जाओ!!! जल्दी आ जाना!!
जी, ऑन्टी!!
रूमी ने सबको उनकी

चाय उनके कमरे मे दी, और दादी तो हॉल मे बैठी थी वही पर चाय दे दी!! और बैठ कर दादी का हाल पूछने लगी!!!
"वैसे दादी आदित्य जी, कुछ बाते बताइये न उन्हे क्या पसंद है क्या नही!! क्या करना उन्हे ज्यादा पसंद है!!"
मैने तो उन्हे ऑफिस से आकर अपने कमरे मे खिड़की के पास चाँद से बाते करते हुए ही देखा है!! और कभी कभी बाहर

गार्डन मे या शाम को बाहर कही चले जाते थे; वह ज्यादतर अकेले वक़्त बिताते है!
कभी कभी मेरा मन होता है, तो मैं बाहर जाने को बोलती हूँ तो ले जाते है!!
और कभी कभी मेरी किसी बातों पर मुस्कुरा भी देते है!! तब उन्हे समझना और मुश्किल हो जाता ह, की यही पहले वाले आदि है!!!"
रूमी को आदित्य के बारे मे युह बोलना या बाते

बताना अच्छा लग रहा था, और मन ही मन सोच रही थी, इसे याद नही सब फिर भी आदि के बारे मे ऐसे बाते कर रही है जैसे हक हो उसका!!!
खैर दादी ने कहा-- वो बहुत शर्मिला और नटखट है, उसे मेरे हाथ का गाजर का हलवा बहुत पसंद हैं!!
वो कुछ साल पहले की ही बात है, जबसे वो थोड़ा अकड़ू हो गया है!!
कुछ साल पहले मतलब

क्या हुआ????? रूमी हैरान होते ही पूछने लगी!!!
तभी आदित्य उन्हे बाते करते सुन लेता है, जल्दी से दादी क्या आप भी पुरानी बात लेकर बैठ गयी, क्या हुआ है मुझे!??? ठीक तो हूँ!! और बीती बात भूल जाना ही बेहतर है!!
तभी हैरान होती है इन्हे क्या हुआ ऐसा क्यु व्यवहार कर रहे है, खैर छोड़ो मुझे तो आन्टी जी

की बोल कर आई थी अभी आ रही हु, मैं तो यहा बातों मे लग गयी!!
रूमी के किचन मे जाते ही, क्या दादी उसे ऐसी बाते मत करो उसकी तबियत खराब हो सकती है, वैसे भी डॉ ने मना किया है सब बताने या कुछ याद दिलाने से वक़्त के साथ उसे खुद याद आ जायेगा!!!
हाँ पर जिस तरह वो बातें कर रही थी, मैं भावनात्मक हो गयी थी,,

अब मे जा रही श्री किशन जी आरती करने शाम हो गयी!!
आदित्य भी लेपटॉप पर अपने ऑफिस के काम करने लगा!!
शाम 7 बजे सभी डाइनिंग टेबल पर इकठ्ठे हुए, और आदि के पापा भी बाहर से आ गए होते है!!
सारे बहुत सालों बाद इकठ्ठे होकर डीनर कर रहे थे,
"वाह! आज लग रहा कंप्लीट फैमिली""

कंप्लीट कहा अभी तो कोई मिसिंग है, वर्धना ने आदि की और इशारा करते हुए कहां!!!!
सभी जोर से हसने लगे, आदि कुछ बोल न सका, वो चुप चाप खाना खा कर अपने कमरे मे जाने लगा, तभी रूमी एक कप कॉफी दे देना!!!
सभी ने खाना खा कर अपने कमरे मे चले गए सोने की तैयारी करने!!
वर्धना, रमेश ने सब समेटने लगे, और रूमी

आदि के लिए कॉफी बनाने लगी!!
कॉफी बना कर वो आदि के कमरे मे लेजाने लगी!
वह आदि के कमरे के दरवाजे पर पहुँच कर गेट पर क्नोक् किया, "मैं कॉफी लाई हु"
ओह्ह!! आओ अंदर!
रूमी कॉफी टेबल पर रख दिया, और गुड नाइट आदित्य जी कह कर वहा से चली गयी!!!!
अपने कमरे मे आकर वह

सोने की तैयार करने लगी!!!

to be continue.....

रास्ते से गुज़र ही रही थी की, सामने से किसी सक्स को अपनी ओर आते देख, मुझे काफी अजीब लगा। मैने ज्यादा ध्यान नही दिया और अपने रास्ते की ओर चलने लगी, तभी पीछे से आवाज़ आई। हैलो आशी!!!!!

मैं अचानक रुक कर पीछे मुड़ी ही थी की, पीछे कोई नहीं था। ये देख मुझे थोड़ा अजीब लगा, पर मैं

दुबारा आगे बढ़ने के लिए कदम बढ़ाया, थोड़ी दूर चलते ही मुझे दुबारा आवाज़ सुनाई दी। लेकिन ये आवाज़ पहले वाले से अलग थी, "कहाँ जा रही हो वापस लौट आओ मेरे पास"
ये सुन मैं घबरा गयी, और पीछे मुड़ कर देखा! पर वहाँ कोई नही!!!!
अब थोड़ा डर भी लगने लगा था मुझे, की कौन है और ये आवाज़ किसकी

है, अगर कोई मज़ाक कर रहा है तो क्यों???
उस वक़्त मेरे मन मे कई सवाल चल रहे थे, पर जवाब नही थे किसी के!!!!!
चलते चलते मैं बस स्टैंड पर पहुँच चुकी थी, जहाँ से मुझे घर के लिए बस मिलती है, स्टैंड पर पहुँचते ही बस जल्दी आ गयी, मैं जल्दी से चढ़ कर सीट पर बैठ गयी।
और अपने कानों मे ear-phones लगा कर गाने

सुनने लगी, और आँखे बंद करके खिड़की की तरफ़ सर झुका करके गाने को फील कर रही थी।
तभी अचानक मेरे मोबाइल पर किसी un-known number से call आता है, मैंने उठा कर हैलो कहा ही था की उधर से आवाज़ आई, "कैसी हो आशी!!! मुझे पहचाना या भूल गयी?
और अचानक call कट गया, मैंने दुबारा call

लगाया पर number wrong और this number is not available!!!
ये सुन मैं डर गयी की कौन था, और क्या बोल रहा था!!!!!
लेकिन कोई मज़ाक भी ऐसा कौन कर सकता है।।।।
मझे बस इंतज़ार था की कैसे भी मैं जल्द से जल्द घर पहुँच जाऊँ..... दिल मे बेचैनी सी थी, और डर भी लग रहा था।

घर पहुँचने मे अभी कुछ मिनट थे, लेकिन मेरा ध्यान बार बार उन्ही सब बातो और घटनाओ पर जा रही थी।
तभी एक बार फिर, मेरे मोबाइल पर किसी un-known number से टेक्स्ट आता है, "क्या हुआ आशी!! इतनी घबराई हुई क्यों हो".....
कौन हो, और क्यों परेशान कर रहे हो, चाहते क्या हो?????
ये देख मेरे रोंगटे खड़े हो

गए, की मेरा एक भी टेक्स्ट टाइप नही हो रहा, बस उधर से टेक्स्ट आ रहे है!!!!!!!
मैने जल्दी से मोबाइल स्विच ऑफ कर दिया!!! तभी स्विच ऑफ मोबाइल पर दुबारा उसी un-known number से call आता है, मैने जैसे तैसे call उठाया, "क्या हुआ आशी!! मोबाइल स्विच ऑफ कर दिया, मुझ से बात भी नही करनी" अब????

मैं अब बहोत डर चुकी थी, इंतज़ार सिर्फ़ घर पहुँचने का था, कुछ देर बाद स्टैंड आ गया जहा मुझे उतरना है, मैं बस से उतर ही रही थी, तभी फिर से, पीछे से आवाज़ आई, कल फिर मिलेंगे आशी!!!!!
मैं पीछे मुड़ कर देखा कोई नही था, और हैरानी भी हुई की बस मे अचानक से सारे व्यक्ति कहा चले गए, कोई भी नही पूरी बस खाली, तो

मुझे आवाज़ किसने लगाई????
मैं जल्दी से बस से उतर कर घर की ओर जाने लगी, घर पहुँच कर मैने दरवाज़ा खोल कर अंदर गयी और दरवाजा बंद कर दिया और उपर सीढ़ियों से उपर जाने लगी.....
उपर पहुँच कर देखा की मम्मी किचन मे दोपहर का नास्ता बना रही थी, घर पहुँच कर मैं कुछ पल के लिए वो सब भूल गयी

थी, की आज क्या क्या हुआ था!!!!
मैं अपने कमरे में जा कर जूते निकाल कर एक कोने मे रख दिया, बैग को साइड मे, और बेड पे सीधा लेट गयी और दोनों हाथो को बेड पर दोनों साइड फैला दिया और पाँव को एक के उपर चढ़ा कर लेटी हुई थी, तभी अचानक दोनों छोटी बहने सामने से दोड़ते हुए आ रही थी, मानो जैसे कोई ख्वाब देख रही हूँ या

कोई फिल्म चल रही हो, उसी तरह सब हो रहा था धुँधला धुधला सा दिख रहा था.....
दोनों दोड़ते हुए कमरें मे आई, और कमरे मे आकर एक कोने मे दोनों हँस रही थी, तभी अचानक एक की नज़र मेरी और देख रही थी और धीरे-धीरे मेरी तरफ़ आ रही थी,मेरे पास आकर वो मेरे उपर चढ़ गयी, और मेरे दोनों हाथों को साइड पकड़ लिया, और जोर-

जोर से हसने लगी, तभी उसका चेहरा डरावना सा हो गया, और दांत काले काले और खून से लथ पथ टपकता हुआ, आँखे गुस्से से लाल पीले, और उसकी हसने की आवाज़ जैसे मेरे कानों मे कोई तार सी चुभ रही हो!!!!!!! ये देख मैं बहोत डर गयी, की समझ नही आ रहा था क्या करू... मैने अपना शरीर हिलाने की कोशिश की पर कुछ नही हुआ, मानो जैसे किसी ने जकड़

लिया हो या सुन्न पड़ गया, मैने बोलना चाहा पर गले से एक आवाज़ नही निकल रही,,,, मेरे आँखों मे सिर्फ़ आँसू थे, और चेहरा डर से पीला होंठ सुख चुके थे??????? तभी रूम मे अंधेरा छा गया, और मुझे कुछ नही दिख रहा था?????
थोड़ी देर बाद मुझे होश आया,और मैने चारों तरफ़ देखा अभी आंधी रात हो रही थी, तब कुछ देर के बाद मुझे एहसास हुआ

की मैं सपना देख रही थी, ये देख मुझे सुकून सा मिला। पर एक चीज़ मैने गौर किया मैं वैसे ही लैटी हुई थी, और मेरे दोनों हाथ उसी तरह दोनों साइड फैले हुए थे, और पाँव उसी तरह एक के उपर और ठीक उसी direction मे सो हुई हूँ!!!!!!!
एक पल के लिए भी मुझे ये एहसास नही हुआ की मेरी आँखे बंद थी, और मैं सपना देख रही थी!!!!!!!!!

मुझे सच मैं ऐसा लग रहा था, जैसे वो सब सच मे मेरे साथ हो रहा था!!!!!
इन सब घटनाओ से मैं अंदर ही अंदर काफी डर चुकी थी, मैं जैसे तैसे उठ कर अपनी बड़ी बहन के पास जा कर उससे लिपट कर सो गयी, पर नींद नही आ थी..... लग रहा था दुबारा वही सब फिर से..... नही दुबारा नही,,, मैं आँखे खोल कर ही लेटी हुई थी, थोड़ी में मुझे

खुद ही नींद आ गयी, और मैं सो गयी!!!!!!!
सुबह उठ कर मैं सोच रही थी की रात को जो मैंने देखा वो क्या सच मे एक सपना था या सच में मेरे साथ ये सब हुआ????
मुझे कुछ समझ नही आ रहा था की ये सच था या एक हकीकत??????
ये सोचना छोड़, मैं बाथरूम में जाकर वज़ू किया, और कमरे मे जनमाज़ बिछा कर नमाज़ पढ़ा।

तब जाकर मेरे दिल को सुकून मिला, और मेरा डर कम हुआ!!!!!!!!

सुबह के 7:00 बज रहे थे, उठ कर फ्रेश हो कर मैं ऑफिस के लिए तैयार होने लगी, तैयार होने के बाद नास्ता किया, और अपना बेग उठा कर ऑफिस के लिए निकल गयी, आज रोज़ के मुताबिक थोड़ा जल्दी निकली थी!!

घर से बस स्टैंड पर पहुँचते ही बस मिल गई, बस मैं द्वारका मोड़ तक गयी! आज तो द्वारका

मोड़ पर भीड़ नही थी, मेट्रो स्टेशन पर पहुँचते ही 2 मिनट मे नोएडा एलेक्ट्रॉनिक सिटी सेंटर की मेट्रो आई!!! मैं आज लेडीज बोगी मे चढ़ कर सीट पर बैठ गयी, बैठते ही मैंने अपना मोबाइल और इयरफोन्स निकाल कर गाने सुनने लगी, गाने सुनते सुनते मे उसी मे मगन हो गयी!! अपनी ही खयालों मे खो गयी थी!!!

गाने सुनते सुनते मेरे mind मे कही सारे

सवाल या बाते चल रही थी, जो हर बार मुझे उलझन मे डालती है!!

ये सोचना छोड़ जब मैने अपनी आँखे खोला और खिड़की से देखा! तब तक नोएडा सेक्टर 16 आया हुआ था,,

अभी तो समय था ऑफिस पहुँचने मे तभी आचानक मेरी नजर मेट्रो के दूसरे डब्बे मे खड़े एक सक्स पड़ गयी, मैं 10-15 मिनट उसे एक टक देखती रही, उसने ब्लैक

टी- शर्ट और ब्लू डेनिम जीन्स पहनी हुई थी, और काफी स्मार्ट, हैंडसम भी था!!!

थोड़ी देर बाद मुझे एहसास हुआ, ये मुझे क्या हुआ???? ऐसी तो नही हूँ, फिर ये सब क्यु???

मैं फिर उस सक्स की ओर दुबारा देखने लगी, इस बार वो भी मेरे तरफ़ देखने लगा, मैंने तुरंत अपना सिर दूसरी ओर घुमा लिया!!! फिर कुछ पल फिर से मैं!!!!

अब तक उसे भी पता चल गया की मैं उसे देख रही हूँ!!!!

कुछ देर बाद नोएडा सेक्टर 62 आया और वह उतर गया,,, नज़र तो कह रही थी, थोड़ी देर ओर!!!!!!!

पर मैं सोच रही थीं, ये सब क्या और क्यु???? मैं तो किसी और से??? तो ये सब!!! ये attraction.....और मेरा mind????

तभी नोएडा एलेक्ट्रॉनिक सिटी station आ गया, मैं उतरी और मेरे face पर हल्की सी smile थी,

वो इसलिए की मुझे समझ आ गया की वो सब सिर्फ attraction था और कुछ नही!!!!!

ऐसा हो जाता है कभी कभी.....

life है! आज़माती बहुत है!!!

बस याद तुम्हे रखना है तुम कौन हो और क्या हो!!!!!! ये सब लाइफ का हिस्सा है और कुछ नही!!!!!!

अब तक जो सुबह से मेरे mind मे जो उलझन थी वो खत्म???? और सब clear हो गया!!!!!!

उस दिन समझ आया कोई भी इंसिडेंट ऐसे ही नही होता, कुछ मतलब या तुम्हारे सवालो के जवाब होते है!!!!

उलझन कोई भी हो, पर सोल्यूशन हमेशा टेढ़े होंगे!